ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

मैत्रेयी पुष्पा के 'फाइटर के डायरी' में स्त्रियों का जीवन–संघर्ष

KEY WORDS: .

पूनम हिन्दी विभाग, गाँव – झोझु खुर्द, जिला – भिवानी (127310)

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य ने प्रगति के नए प्रतिमान स्थापित किए हैं। कथा साहित्य में जहाँ पुरुषों ने बढ़–चढ़कर अपनी भूमिका दर्ज की है वही स्त्रियाँ भी इस सन्दर्भ में पुरुष को कड़ी टक्कर दे रही हैं या यूँ कहे स्त्री लेखन के पक्ष में लिखने वाली, स्त्री संघर्ष को नए आयाम देने वाली स्त्री पुरुष से किसी भी प्रकार कम नहीं है। स्त्री संघर्ष को यदि वास्तविकता के साथ जानना हो तो शहरी चकाचौंध से निकलकर ग्रामीण धूल में शामिल होना ही पड़ेगा। मैत्रेयी पुष्पा भी स्त्री संघर्ष को शहर के राजमार्ग से निकालकर गांव के चौराहों में लेकर आई है। मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री के दुःख की भूमि पर उतरकर उसे केवल सांत्वना ही नहीं दी अपितु, उसे संघर्ष के लिए जागृत भी किया। संघर्ष केवल समाज या बाह्य परिस्थितियों से नहीं बल्कि सर्वप्रथम संघर्ष की सीढ़ी का पायदान स्वयं स्त्री है। उसे संघर्ष की शुरूआत स्वयं से ही करनी होगी। जब तक स्त्री स्वयं अपने स्वाभिमान की रक्षा नहीं करेगी तब तक किसी ओर से क्या उम्मीद की जा सकती है। स्त्री संघर्ष या विमर्श क्या है ? स्त्री को समाज या राजनीति में अधिकार मात्र देना ही स्त्री संघर्ष या विमर्श है ? स्त्री को समाज की ईकाई भर मानना स्त्री विमर्श है ? शायद यह स्त्री संघर्ष या विमर्श का एक पहलू हो सकता है परन्तु स्त्री विमर्श इससे कहीं ऊपर की बात है। इसी सन्दर्भ में रोहिणी जी कहती है, ''स्त्री विमर्श अस्मिता आन्दोलन है। यह हाशिए पर धकेल दी गई अस्मिताओं को पुनः केन्द्र में लाने और उनकी मानवीय गरिमा को पुनर्प्रतिष्ठित करने का महाभियान है।''[1]

अपने कथा साहित्य में स्त्री को सशक्तता प्रदान करने के लिए मैत्रेयी पुष्पा ने उसे ना जाने कैसी–कैसी कसौटियों पर कसा है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में स्त्री को केवल 'बेचारी' या 'अबला' नारी के रूप में चित्रित नहीं किया, अपितु अपने हिस्से की लड़ाई लड़ने के लिए प्रेरित होते या करते भी दिखाया है। संघर्ष की कहानी कहती उनकी पुस्तक 'फाइटर की डायरी' केवल स्त्री के शोषण, अत्याचार की कहानी नहीं कहती बल्कि स्वतन्त्र जीने का अधिकार माँगती और अपने अन्याय का प्रतिकार करती लड़कियों की व्यथा है। भारतवर्ष के आँचल में बसा हुआ हरियाणा जहाँ की पावन धरती, संस्कृति और सभ्यता के गुणगान गाते हम थकते नहीं उसी हरियाणा की लड़कियों की कथा को कहती मैत्रेयी पुष्पा कि ये पुस्तक वास्तविकता को दर्शाती है। वास्तविकता हरियाणा प्रदेश की नहीं बल्कि वास्तविकता वहाँ के स्त्री–पुरुषों की सोच और मानसिकता की। हरियाली से परिपूर्ण कहा जाने वाला हरियाणा अपनी बेटी या बहुरुपी हरियाली का किस तरह से शोषण करता है, वही इस पुस्तक में दर्शाया गया है कि अपनी इसी संकुचित सोच और दकियानूसी विचारधारा के कारण स्त्री और पुरुष के बीच की भेदभाव रूपी रेखा चौड़ी होती जा रही है। समय रहते यदि समस्या का समाधान नहीं किया गया तो यह समस्या सम्पूर्ण देश के लिए घातक सिद्ध होगी।

स्त्री जन्म की उपेक्षा

प्रधान समाज में स्त्री की उपेक्षा जन्म से ही आरम्भ हो जाती है। यह धारणा आम हो जाती है कि पुत्र परिवार को गतिशीलता प्रदान करता है। पुत्री के जन्म को अभिशाप या बोझ माना जाता है। इसको स्पष्ट करने के लिए मैत्रेयी पुष्पा कहती हैं, ''पूजा कहती है, जब वह पैदा हुई तो घर में सब रोए थे। इसका पालन–पोषण फिर कैसे होगा।''[2] हरियाणा राज्य में सबसे ज्यादा लिंगानुपात का अंतर इसी छोटी सोच का परिणाम है। लड़के के जन्म पर कहीं कुँआ–पूजन तो कहीं मिठाई पकवान आदि बनाए जाते हैं परन्तु लड़की के जन्म पर मातम की तरह दिन गुजरते हैं और सान्त्वना के शब्द सुनाई देते हैं। 'फाइटर की डायरी' में मैत्रेयी पुष्पा ने हालातों से जुझ रही ऐसी ही लड़कियों का वर्णन किया है गर्भावस्था से लेकर मृत्युपर्यन्त शोषण का शिकार होती रहती है। लेकिन उस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने का साहस नहीं कर पाती और यदि कोई करती भी है तो वह कानून के अंधेरे कुँए में समाज के द्वारा धकेल दी जाती है।

पारिवारिक संघर्ष

परिवार समाज की एक महत्त्वपूर्ण ईकाई हैं और परिवार के दो महत्त्वपूर्ण हिस्से हैं, स्त्री और पुरुष। स्त्री के बिना पुरुष उसी प्रकार अधूरा है जैसे प्राण के बिना शरीर। पुरुष को हमारा समाज स्वतन्त्रता और स्वाभिमान के साथ जीने का अधिकार पैदा करता है, अफसोस यही बात हम स्त्री के विषय में नहीं कह सकते। स्त्री का जन्म ऐसे लगता है मानों संघर्ष के लिए ही हुआ हो। 'फाइटर की डायरी' में स्त्री अपने स्वयं के बारे में क्या सोचती है, इस विषय पर मैत्रेयी पुष्पा कहती है, ''यह घर भाइयों का है अम्मी का घर भी है और मेरा भी लेकिन मम्मी और मैं औरत हैं। औरत मर्दो के घरों में रहा करती हैं।''[3] इस प्रकार यदि स्त्री स्वयं अपने विषय में हीनता से ग्रस्त रहेगी तो वह सफलता के उच्च शिखर पर कैसे पहुँच सकती है। कोई भी परम्परा या मान्यता जो समाज के लिए घातक सिद्ध हो, उसके बदलाव या सुधार के लिए प्रयास स्वयं से शुरू करना चाहिए। तभी स्त्री व पुरुष के बीच खीचीं पक्षपात की विभाजन रेखा को चौड़ा होने से बचाया जा सकता है।

सामाजिक संघर्ष

स्त्री और पुरुष समाज की महत्त्वपूर्ण ईकाई हैं। इन दोनों से मिलकर ही परिवार बनता है और परिवारों से मिलकर समाज का निर्माण होता है। कहने को तो समाज को मातृ–प्रधान समाज कहा जाता है। लेकिन इसी समाज में स्त्री को विभिन्न सामाजिक कुप्रथाओं का शिकार होना पड़ता है। मैत्रेयी पुष्पा ने 'फाइटर की डायरी' में स्त्री के स्त्रीत्व के लिए सशक्त आवाज उठाई है। भ्रूण हत्या, बाल–विवाह, दहेज प्रथा और शोशण जैसी विभिन्न समस्याओं से भी अवगत कराया है।

भ्रूण हत्या के विषय में मैत्रेयी पुष्पा लिखती है, ''उस कैद में चुपचाप बैठी यह सोचती रही, क्या मिला मुझे माँ–बाप के लिए लड़कर। क्या मिला बाबा के परिवार की इज्जत रखकर ? मैं क्यों नहीं दूसरी लड़कियों की तरह रहती। चुपचाप भले गर्भ गिराती रहती मेरा दुश्मन कोई ना होता। मार खाती रहती, गाँव के लोग तरस खाते.... भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक कुप्रथा के लिए दहेज प्रथा भी एक प्रमुख कारण है। मध्यवर्ग परिवार में दहेज का प्रचलन काफी हद तक देखने को मिलता है। वो परिवार इसे अपनी शान के लिए प्रयोग करते हैं।''[4] फाइटर की डायरी में मैत्रेयी पुष्पा ने इस कुप्रथा पर कड़ा प्रहार किया है और स्त्री जाति के प्रति हो रहे अन्याय का चित्रण भी किया है।

फाइटर की डायरी में मैत्रेयी पुष्पा ने उन सब लड़कियों का वर्णन भी किया है जो बाल–विवाह का शिकार होती हैं। बाल–विवाह जैसी कुप्रथा, आपसी तनाव, संघर्ष, झगड़े और यहाँ तक कि मृत्यु जैसी घटनाओं का एक विशेश कारण है। इन कुप्रथा का शिकार अधिकतर स्त्रियाँ ही होती हैं।

स्त्री–पुरुष के बीच भेद–भाव

कहने को हम 21वीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं परन्तु स्त्री व पुरुष के बीच भेद– भाव की खाई दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। जन्म लेने से लेकर शादी, शिक्षा और नौकरी तक भेद–भाव स्त्री का पीछा नहीं छोड़ता। मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री जन्म की उपेक्षा, उसे शिक्षा का अधिकार न देना और स्त्री के प्रति शोषण को 'फाइटर की डायरी' में मार्मिक ढ़ंग से व्यक्त किया है। ''मम्मी ने एक बेटी को जन्म दिया। पहला लड़का जहाँ अपने जन्म के साथ घर–परिवार में खुशियाँ भर देता है और अपनी माँ को सौभाग्यशाली बना देता है। वहीं पहली लड़की अपने जन्म से निराश तो करती है लेकिन बहू की कोख उर्वरा है इसकी गारंटी भी देती है। बस इसी आशा में मम्मी की बेटी को झेला गया कि बेटी हुई तो आगे बेटा भी होगा।''[5]

आधुनिक काल में अकसर स्त्री और पुरुष की समानता के नारे लग रहे हैं। परन्तु वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत है। यदि किसी को एक संतान हो तो सभी चाहते है कि वो लड़का हो लड़की कोई नहीं चाहता। अक्सर हमारे समाज में लड़के को पढ़ाने की होड़ होती है, उन्हें विदेश भेजा जाता है वही ऐसा लड़कियों के विषय में नहीं सोचा जाता। ग्रामीण परिवेश में केवल गृहस्थी सम्भालना ही लड़की का धर्म माना जाता है। लड़की के जन्म लेते ही स्त्री को इस तरह से देखा जाता है मानो कोई अपराध करके विश्राम कर रही हो। ''दूसरे लड़के की चाह में फिर एक लड़की पैदा हो गई। मम्मी असफल विद्रोही की तरह जचगी में पड़ी हुई थी और पापा पछाड़े हुए यौद्धा से, जिसे पागल होकर मरना हो या फिर नशे की आड़ में कुछ समय निकाल देना हो। परिवार नाम की संस्था में पुरुश की निरकुंशता का फल नफरत के रूप में औरत भोग रही है।''[6]

मैत्रेयी पष्पा कहती है, ''आज की स्त्री के लिए धर्म केवल बच्चे पैदा करना और घर संभालना है। शादी का अर्थ क्या था, माँ–बाप के घर से विदा होकर पति के घर जाकर चूल्हा–चौका संभालना और बच्चे पैदा करना ?''[7] जन्म और शिक्षा के पश्चात जब नौकरी की बात आती है तो बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ स्त्री का नौकरी करना वर्जित माना जाता है। ऐसा ही एक क्षेत्र पुलिस विभाग है जहाँ स्त्री का नौकरी करना उसके चरित्र से जोड़ा जाता है। पुरुष ही नहीं बल्कि स्त्री भी स्त्री के नौकरी संबंधी मामलों को दबा देना चाहती है, ''तुम पुलिसवाली पेंट कमीज के साथ सिर पर पुलिस की टोपी या हैट कन्धे पर राइफल, पावों में भारी मर्दाने जूते। सातों सिंगार में सजी बन्दी–नथुनी वाली पत्नी की कल्पना कोई कैसे करें ? सावधान की मुद्रा में तनी हुई खड़ी लड़की किसी के पाँव कैसे पूजेगी, उसे तो अपने अफसरों को सलूट देने की आदत है।''[8] कितनी ही लड़कियाँ काबिल होते हुए भी नाकाबिल बन कर रह जाती है और वो भी केवल समाज की भेदभाव नीति के कारण।

इसी पक्षपाती नीति के कारण स्त्री जाति पर अन्याय और अत्याचार के पहाड़ टूट रहे हैं, जिससे सम्पूर्ण मानव जाति भी प्रभावित हो रही है। आधुनिक स्त्री ने आत्मनिर्भर होने की पहल कर दी है। अब आवश्यकता है उसे सम्पूर्ण स्त्री जाति से जोड़ा जाए।

अन्याय और अत्याचार

आदिकाल से लेकर मध्यकाल और आधुनिक काल तक की, स्त्री के साथ न्याय शब्द जुड़ा तो अवश्य पर उस शब्द को कभी क्रियान्वित होते नहीं देखा गया। आदिकाल में सती प्रथा हावी थी तो मध्यकाल में सामंतवाद स्त्री की चेतना पर विरामान था। आधुनिक काल ने स्त्री पर अन्याय और अत्याचार का कहर ही ढा दिया। जितनी उन्नति समाज ने की उतने ही नऐ अत्याचारों और अनाचारों का जाम स्त्री के पक्ष में थमा दिया।

'फाइटर की डायरी' में मैत्रेयी पुष्पा ने लड़कियों पर हो रहे अत्याचारों, अन्यायों और शोषण के विरुद्ध शंखनाद किया है। ''शराब के नशे में धुत लोग गाँव को नरक बनाए हुए हैं। कोई–कोई तो अपनी पत्नी को गाय भैंस की तरह रस्सियों से पीटता है, डंडे बरसाता है। यह रोज का किस्सा है एक दिन तो एक आदमी अपनी घरवाली को गंडासे से काट रहा था चार हमले किए, सब देख रहे थे, कोई बचाता नहीं था।''[9] इसी तरह के घटनाओं के समाचार रोज अखबारों में पढ़ने को मिल ही जाते हैं, ऐसा लगता है मानों यह एक परंपरा बन गई है। समाज में इस प्रकार की घटनाओं को घरेलू हिंसा का नाम दिया जाता है। किन्तु यह हिंसा केवल घर तक ही सीमित नहीं है बल्कि सम्पूर्ण समाज में हर जगह व्याप्त है।

मैत्रेयी पुष्पा कहती हैं कि स्त्री द्वारा घर के किसी कार्य में दखल देना कोई पसंद नहीं करता। उसे सत्य बोलने की सजा इस तरह मिलती है जैसे कोई गुनाह करके भागी हो, ''शबनम को याद है, वह पिटाई जो एक सच बोलने पर उस पर टूटी थी खास उसकी मां ने, अपनी नानी ने .. .. उसके हाथ पाँव तोड़ डालने की हद तक। इतने थप्पड़ मारे थे माँ ने मुँह सुजकर फूली हुई रोटी हो गया।''[10] सत्य का तात्पर्य यहाँ खोखली परम्परा के विरुद्ध आवाज उठाना है। स्त्री के प्रति हो रहे इस अन्याय और अत्याचार का स्त्री प्रतिरोध तो कर रही है परन्तु उसे सम्पूर्ण रूप से सफलता नहीं प्राप्त हुई। इसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता की यह सफलता कब मिलेगी ? मिलेगी भी या नहीं।

निश्कर्षतः हम कह सकते हैं कि मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री जीवन संबंधी सभी पहलुओं को बहुत ही मार्मिक और तटस्थता के साथ 'फाइटर की डायरी' में प्रस्तुत किया है। 'फाइटर की डायरी' में मैत्रेयी पुष्पा ने उन बहादुर और ओजस्वी लड़कियों का भी वर्णन किया है जो मात्र अन्याय सहन नहीं करती अपितु उस अन्याय का मुकाबला करके अपने जीवन को नई परिभाषा देती हैं। परन्तु बहुत सी ऐसी स्त्रियाँ है जो इन बंधनों, परम्पराओं और तुच्छ विचारधाराओं की शिकार आज भी हैं। आवश्यकता है उन्हें इन सबका मुकाबला करने की और स्त्रीत्व की रक्षा करने की ताकि स्त्री जाति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बन सके।

संदभ ग्रन्थ सूची

1. रोहिणी अग्रवाल, स्त्री लेखन : स्वप्न और संकल्प, राजकमल प्रकाशन, बी–1, नेताजी सुभाश मार्ग, नई दिल्ली–110002, पृ० 12
2. मैत्रेयी पुष्पा, फाइटर की डायरी, राजकमल प्रकाशन, बी–1, नेताजी सुभाश मार्ग, नई दिल्ली–110002, सं० 2012, पृ० 17
3. वही, पृ० 49
4. वही, पृ० 103
5. वही, पृ० 126
6. वही, पृ० 131
7. मैत्रेयी पुष्पा, गुनाह बेगुनाह, राजकमल प्रकाशन, बी–1, नेताजी सुभाश मार्ग, नई दिल्ली–110002, सं० 2012, पृ० 12
8. मैत्रेयी पुष्पा, फाइटर की डायरी, राजकमल प्रकाशन, बी–1, नेताजी सुभाश मार्ग, नई दिल्ली–110002, सं० 2012, पृ० 149
9. वही, पृ० 145
10. वही, पृ० 157